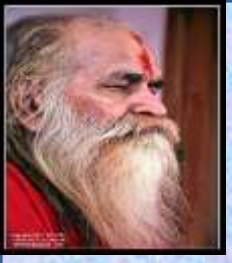

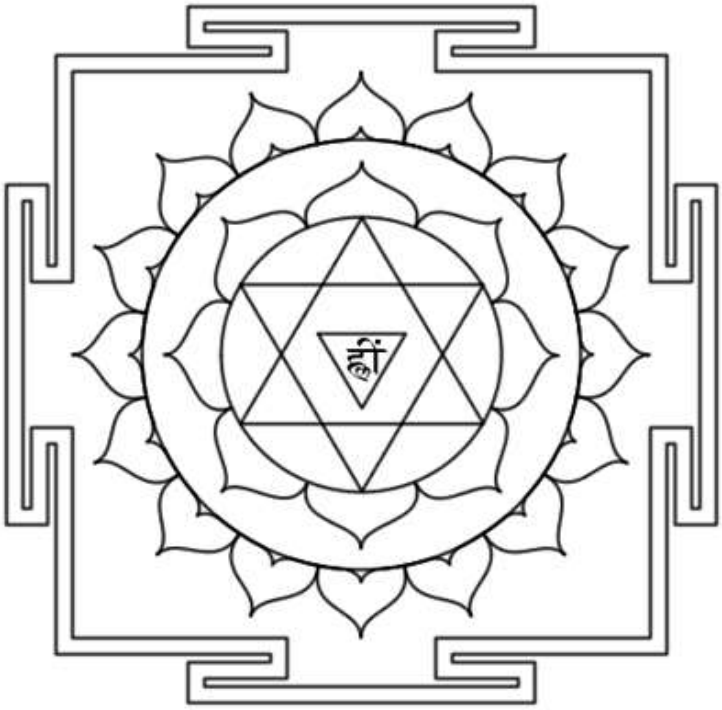

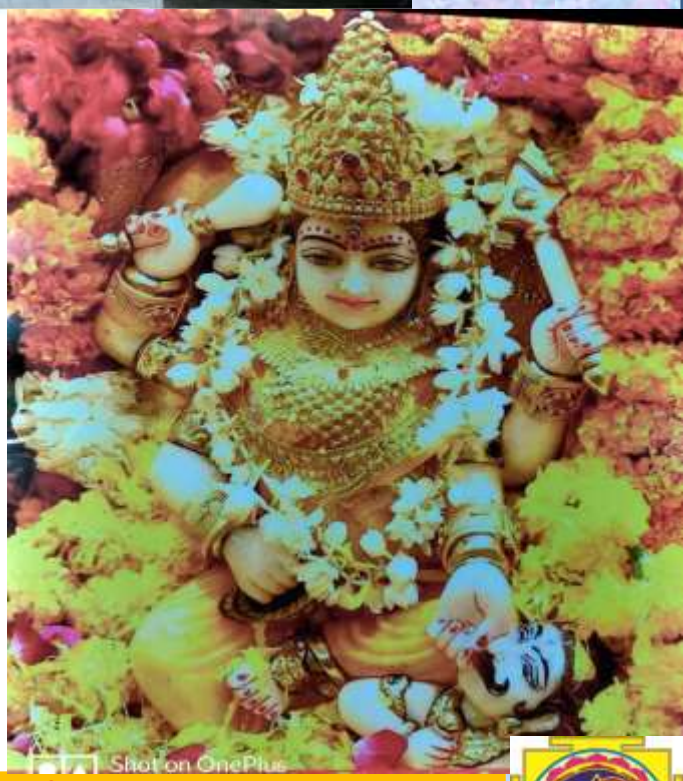

सौजन्य: मां पाताल भैरवी मन्दिर, श्री बर्फानीधाम, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़, भारत

श्री बगलामुखी-महाविद्या

अष्टम् महाविद्या

अथ प्रवक्ष्ये शत्रूणां बगलामुखी । प्रणवोगगनं - पृथ्वीशान्ति - बिन्दुयुतंबग ।।1।।
लामुसाक्षोगदीर्सदुष्टार्नावाहलीन्दुयुक् । मुखपदंस्तंम्भयान्ते जिह्वांकीलयवर्णकाः ।।2।।
बुद्धिंविनाशयान्ते तु बीजंतारोग्निसुन्दरी । षट्त्रिंशदक्षरो मन्त्रो नारदोमुनिरस्यतु ।।3।।
छन्दोपिवृहती ज्ञेयं देवताबगलामुखी । नेत्राक्षसायक-नवपञ्च-काष्ठाभिरङ्गकम् ।।4।।

.....मन्त्र महोदधि

अथ मन्त्रः

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।

प्रणव (ॐ) शान्ति एवं बिन्दु सहित गगन एवं पृथ्वी (ह्लीं) फिर 'बगलामु' एवं साक्ष गदी (खि) फिर 'सर्वदुष्टानां वा' एवं इन्द्रयुक् ह्ली (चं) फिर 'मुखंपदं स्तम्भय' के बाद 'जिह्वांकीलय' एवं 'बुद्धिंविनाशय' फिर बीज (ह्लीं) तार (ॐ) तथा अग्निसुन्दरी (स्वाहा) लगाने से यह 36 अक्षर का मन्त्र बनता है । इस मन्त्र के ऋषि नारद हैं, वृहती छन्द है, बीज ह्लीं है, शक्ति स्वाहा है, कीलक ॐ है तथा देवता बगलामुखी हैं । मन्त्र के 2, 5, 5, 9, 5 एवं 10 अक्षरों से षडङ्गन्यास करना चाहिए ।

इसी बगला विद्या को 'ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनी', 'स्तब्ध-माया', 'प्रवृत्ति रोधिनी', 'मन्त्र जीवन विद्या', 'प्राणिप्रज्ञाप्रहारिका' तथा 'ब्रह्मास्त्र-विद्या' कहा जाता है । इसे ही षट्कर्माधार विद्या भी कहते हैं । इन षट्कर्मों में स्तम्भन, वशीकरण (मोहन), आकर्षण, विद्वेषण, उच्चाटन एवं मारण कर्म आते हैं । यह विद्या अति गोपनीय व परम पवित्र है । बगला सब विद्याओं का ग्रास करने वाली और तीनों लोकों में दुर्लभ है । ब्रह्मा के पुत्र नारद ने मेरुपर्वत पर सांख्यायन मुनि को इस महाविद्या का उपदेश किया था और उन्होंने देवी की कृपा से उसके आगम की रचना की । भाषा-प्रभाव से इन्हें बगुला, बगला, वगुला, वल्गा, वगलामुखी या बगुलामुखी या फिर बगलामुखी कहा जाता है । अधिकाशतः बगलामुखी ही व्यवहृत है और तन्त्रशस्त्रों में भी बगलामुखी ही दिया गया है ।

दशमहाविद्या के अन्तर्गत बगला श्री कुल की हैं । भगवान शङ्कर देवी पार्वती को श्रीबगला के आविर्भाव की कथा सुनाते हैं -कृतयुग में सम्पूर्ण जगत को नष्ट करने वाला तूफान आया । प्राणियों के जीवन पर संकट आया देखकर जगत पालनहार महाविष्णु चिन्तित हो गये । उन्होंने सौराष्ट्र देश में हरिद्रा सरोवर के समीप तपस्या कर भगवती श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी को प्रसन्न किया । श्रीविद्या ने सरोवर से प्रगट होकर पीताम्बरा के रूप में उन्हें दर्शन दिया और बढ़ते हुये जलवेग तथा उत्पात का स्तम्भन किया । श्रीविद्या की यही शक्ति 'वगला' नियन्त्रण करने वाली महाशक्ति हैं, वे परमेश्वर की सहायिका हैं और वाणी, विद्या और गति को अनुशासित करती है । वे सर्वसिद्धि देने में समर्थ तथा उपासको की वाञ्छाकल्पतरु हैं । त्रैलोक्यस्तम्भिनी ब्रह्मास्त्ररूपा श्रीविद्या का वैष्णव तेज से युक्त मंगलवार युक्त चतुर्दशी की मकार-कुल-नक्षत्रों से युक्त रात्रि को 'वीर-रात्रि' कहा जाता है । इसी के अर्धरात्रि के समय पीताम्बरा श्री बगलामुखी का आविर्भाव हुआ ।

ये विष्णु की रक्षा करने वाली वैष्णवी महाशक्ति, त्रिलोक बल को धारण करने वाली, स्तम्भनकारिणी शक्तिनाम रूप से व्यक्त और अव्यक्त सभी पदार्थों की स्थिति का आधार पृथ्वीरूपा शक्ति हैं और वगला उसी स्तम्भन शक्ति की अधिष्ठात्री देवी हैं । स्तम्भन शक्ति से सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि समस्त लोक अपनी-अपनी मर्यादा में ठहरे हुये हैं अर्थात् स्तम्भित हैं । दुरूह अरिष्टों एवं शत्रुओं के दमन के शमन में इनके समकक्ष अन्य कोई भी नहीं है यही कारण है कि साधक चिरकाल से इनका आश्रय लेता आ रहा है । बगलामुखी महाविद्या सिद्धविद्या कहलाती हैं ।

इस विद्या के दो आम्नाय है - दक्षिणाम्नाय और ऊर्ध्वाम्नाय । साधकों को अपने अधिकारानुसार उपासना करनी चाहिये । जब ये दक्षिणाम्नायात्मक होती हैं तो इनकी दो भुजायें ही रहती हैं और जब ऊर्ध्वाम्नायात्मक होती हैं तो चतुर्भुजी बन जाती हैं । यह विद्या बहुधा ऊर्ध्वाम्नाय के अनुसार ही उपास्या हैं । इस आम्नाय में शक्ति सर्वथा पूज्य मानी गयी हैं, भोग्या नहीं । दोनों आम्नायों के बीजमन्त्र और मन्त्राक्षरों की संख्या में सामान्य अन्तर रहता है । दक्षिणाम्नाय में 'ह्लीं' बीज सहित 34 अक्षरों का मन्त्र माना गया है जबकि ऊर्ध्वाम्नाय में यह मन्त्र ब्रह्मास्त्र स्वरूपिणी बगला का होने के कारण 36 अक्षरों का हो जाता है । यथा 34 अक्षर के मन्त्र में **पदं** जोड़ देने से यह 36 अक्षर का हो जाता है । श्रीबगला की उपासना में पीले रङ्ग का विशेष महत्त्व है । जपकर्ता को पीला वस्त्र धारण करके हल्दी के गाँठ की माला से जप करना चाहिए । देवी के पूजन और हवन में पीले पुष्पों, कनेर, गेंदा आदि का प्रयोग करना चाहिए । जप की संख्या 1 लाख बताई गई है । पूजन में चम्पा के फूलों का विशेष महत्व है ।

छः कर्मो में श्रीबगलामुखी स्तम्भन अधिष्ठात्री हैं । मन की अथवा बाह्य या प्रत्यक्ष किसी भी गति को रोकना स्तम्भन कहा जाता है । बाह्य शत्रुओं के समान ही हमारी उन्नति में बाधक तत्त्व काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद-मत्सर को जीतने के लिए और चित्त की स्थिरता के लिए इनकी उपासना की जा सकती है । शरीरान्तर्गत वायु का निरोध करना भी स्तम्भन का आशय है । योग के अनुसार केवली कुम्भक के अभ्यास से वायु पर नियन्त्रण सम्भव है । जो वायु का निरोध करने में समर्थ होता है वह सबका स्तम्भन कर सकता है । मानव शरीर में बहत्तर हजार नाड़ियाँ हैं, इनमें सौ प्रमुख है और इनमें भी दस मुख्य हैं । यथा, **''इडा च पिङ्गला चैव सुषुम्णा च तृतीयका, गान्धारी हस्ति जिह्वा च पूषा चैवयशस्विनी, अलम्बुषा कुहूश्चैव शङ्खिनी दशमी स्मृता ।।''** (गोरक्ष संहिता) श्री बगलामुखी का स्थान इस शरीर में शङ्खिनी नाड़ी में माना गया है । यह शङ्खिनी नाड़ी शरीर के वाम भाग में सुनहरे रङ्ग की पैर से कान के विवर तक जाती है । स्वर्ण वर्ण बगलामुखी का ध्यान शरीर के इसी भाग में करना चाहिए । पूजन क्रम में कई अवसरों पर मुद्राओं का प्रयोग होता है । हमारी पाँचों अङ्गुलियों में पाँच तत्त्व विद्यमान हैं ये क्रमशः अङ्गुष्ठ में अग्नि, तर्जनी में वायु, मध्यमा में आकाश, अनामिका में पृथ्वी और कनिष्ठा में जल के रूप में विद्यमान हैं । देवताओं की प्रसन्नता के लिए इन्हीं तत्त्वों के पृथक-पृथक समावेश से मुद्रायें प्रदर्शित की जाती है तथा न्यास के द्वारा देह को मन्त्रमय बनाकर उपासना की जाती है ।

साधकों को गुरु प्रदर्शित मार्ग का ही अनुसरण करना चाहिये क्योंकि भगवती की साधना में एक अक्षर से सहस्त्र अक्षर तक के मन्त्रों द्वारा विभिन्न काम्यकर्मों की उपासना का उल्लेख मिलता है । अतः मात्र ग्रन्थ-साहित्य पढ़कर साधना में अग्रसर नहीं होना चाहिये । यह जानकारी रखने हेतु श्रेयस्कर है कि मन्त्रों की कितनी विधियाँ उपलब्ध हैं । वैसे सांख्यायन तन्त्र, रुद्रयामल, मन्त्र महोदधि, शाक्त प्रमोद, श्रीविद्यार्णवतन्त्रम् के अलावा सिद्धेश्वरतन्त्र , विष्णुयामल, विश्वसारोद्धारतन्त्र, मेरुतन्त्र आदि ग्रन्थों में श्रीबगलामुखी की साधना का विस्तार से वर्णन है । इनके बीजमन्त्रों एवं मन्त्राक्षरों की संख्या में थोड़े-थोड़े अन्तर से कई उपासना क्रम प्रचलित हैं । यह अवश्य है कि उपासना के क्रम को जिस प्रकार हमने इस ग्रन्थ के माध्यम से एक सूत्र में सङ्कलित कर रखा है उसे जानने से समुचित लाभ तो मिलेगा ही । विधान या पूजाक्रम लगभग एक ही है मूलमन्त्र में भिन्नता हो सकती है । इस ग्रन्थ के महापूजा खण्ड के जिन-जिन स्थानों पर ''ह्लीं'' है वहाँ ''ह्त्रीं'' का भी प्रयोग किया जा सकता है । इस एकाक्षर मन्त्र की महिमा विषय में सांख्यायन-यन्त्र में लिखा है कि एक बीज से ''ह्त्रीं'' यह मन्त्र उत्तम, सर्वार्थ-सिद्धिदायक है । 'स' के बाद आने वाला 'ह' और 'र' के बाद आने वाला 'ल' चतुर्थ स्वर 'ई', रेफ-'र' और बिन्दु ँ से युक्त होकर ''ह्त्रीं'' प्रयुक्त होता है जो ब्रह्मास्त्र का एकाक्षर मन्त्र है ।

ह्लीं - इसके ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता चिन्मयरूपिणी बगलाशक्ति, बीज 'लं', शक्ति 'ह्रीं' और कीलक 'ईं' है ।

इसी प्रकार श्रीबगला के 36 अक्षरों की विद्या में 'ॐ', बगला-बीज 'ह्रीं', बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय, स्थिर माया-'ह्रीं', प्रणव-ॐ, वह्नि-जाया -'स्वाहा' यह 36 अक्षरों वाला मन्त्रराज है । इसी प्रकार श्रीबगला गायत्री मन्त्र निम्न है-

ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भय-बाणाय धीमहि तन्नः बगला प्रचोदयात् ।

इसके ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता चिन्मयीशक्तिरूपिणी बगला, बीज ॐ, शक्ति ह्रीं एवं कीलक विद्महे । यह मन्त्र मन्त्रराज की अङ्गभूता है । वाद-विवाद के समय श्रीबगला मन्त्र का मन ही मन जप करने से विजय प्राप्त होता है । त्रिकाल संध्या करते हुये प्रतिदिन एक सहस्त्र मन्त्र जप करने से छः माह में सिद्धि प्राप्त होती है । तदन्तर जिस किसी कामना से 108 बार मन्त्र का जप किया जाए तो कामना अवश्य पूर्ण होती है । अश्विन, कार्तिक और चैत्र मास सिद्धिदायक है, इसमें भी गुरुवार, रविवार, मंगलवार एवं सोमवार तथा रोहिणी, श्रवण, स्वाति एवं विशाखा नक्षत्र शुभ है ।

श्रीबगला महाविद्या की उपासना सर्वप्रथम ब्रह्मा जी ने की थी । ब्रह्मा जी ने इस विद्या का उपदेश सनकादिक मुनियों को किया । सनत्कुमार ने देवर्षि नारद को और नारद ने सांख्यायन मुनि को इसका उपदेश किया । सांख्यायन ने छत्तीस पटलों में उपनिबद्ध कर बगलातन्त्र की रचना की । श्रीबगला के दूसरे उपासक भगवान विष्णु और तीसरे उपासक परशुराम हुए तथा परशुराम ने यह विद्या आचार्य द्रोण को बताई । सांख्यायन तन्त्र में विभिन्न काम्यकर्मों की साधना और मन्त्रों के अनेक रूप बताये गए हैं । श्रीबगला की उपासना का विस्तार रूद्रयामल तन्त्र, विष्णुयामल, सिद्धेश्वरतन्त्र, विश्वसारोद्धारतन्त्र, मेरुतन्त्र, उत्कटशम्बर, नागेन्द्र प्रयाण तन्त्र, वगलामुखी तन्त्र, शाक्तप्रमोद, मन्त्रमहोदधि, श्रीपीताम्बरातन्त्रम् आदि ग्रन्थों में है । श्रीबगला की उपासना में मन्त्र जप के साथ यन्त्र पर पूजा करने का भी विधान है । यन्त्र में पहले त्रिकोण फिर षट्कोण उसके ऊपर वृत्त में अष्टदलकमल फिर ऊपर वृत्त में षोडशदल कमल लिखकर भूपुर से चतुरस्त्र निर्माण किया जाता है । यन्त्र निर्माण की सामग्री के अलग-अलग विधान हैं, साधको को गुरुनिर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण करना चाहिए । यहाँ हमने श्रीकुल अन्तर्गत छत्तीस अक्षरों वाले ब्रह्मास्त्र बगलामुखी के नित्यार्चन का विधान दिया है । हमारी आवश्यकताओं और कामनाओं का कोई अन्त नहीं हैं ऐसे में सबभार कृपामयी माता पर छोड़कर उनके अनुग्रह प्राप्ति की कामना में ही कल्याण है ।

*

**** सनातन-परम्परायें ****

प्रत्येक सनातन धर्मावलम्बी को अपनी कुल परम्परा का सम्पूर्ण परिचय निम्न ग्यारह बिन्दुओं के माध्यम से ज्ञात होना चाहिए - 1. गोत्र, 2. प्रवर, 3. वेद, 4. उपवेद, 5. शाखा, 6. सूत्र, 7. छन्द, 8. शिखा, 9. पाद, 10. देवता और 11. द्वार ।

हम सभी किसी न किसी ऋषि की संतान हैं। जिस ऋषि कुल से वंश की परम्परा आरम्भ होती है, वे उस ऋषि के वंशज होते हैं और उनका नाम ही गोत्र कहलाता है। प्रवर का अर्थ श्रेष्ठ होता है, गोत्र प्रवर्तक मूल ऋषि के अनन्तर उसी कुल में उत्पन्न तीन अथवा पांच आदि अन्य ऋषि उस गोत्र के प्रवर कहलाते हैं। वेद का तात्पर्य है उस कुल में उनके पूर्व पुरुष जिस वेद के ज्ञाता होते हैं वह उस कुल का वेद होता है। उसकी रक्षा का भार उस कुल को होता है। उपवेद से अर्थ है प्रत्येक वेद से सम्बद्ध उपवेद का ज्ञान । शाखा का अर्थ है वेदाध्ययन करने के लिए निर्धारित परम्परा । सूत्र का सम्बन्ध वेदों के दो सूत्र से है श्रौत सूत्र एवं ग्राह्य सूत्र । छन्द का अर्थ है उस कुल का परम्परागत छन्द का ज्ञान। शिखा का अर्थ है कुल परम्परानुसार शिखा को दक्षिणावर्त अथवा वामावर्त रुप से बांधने की परम्परा। पाद का अर्थ है अपने-अपने गोत्रानुसार अपना पाद प्रक्षालन, बायां अथवा दायां, उसी अनुसार प्रक्षालन की परम्परा। देवता का अर्थ कुल से सम्बन्धित वेद का आराध्य, कुल देवता विष्णु, शिव, दुर्गा, सूर्य इत्यादि में कोई एक। द्वार का अर्थ है यज्ञ मण्डप में यज्ञकर्त्ता जिस दिशा अथवा द्वार से प्रवेश करता है अथवा जिस दिशा में बैठता है वही उस गोत्र वालों की दिशा या द्वार कही जाती है।